Airo International Research Journal

Volume XIV, ISSN: 2320-3714
December, 2017

UGC Approval Number 63012

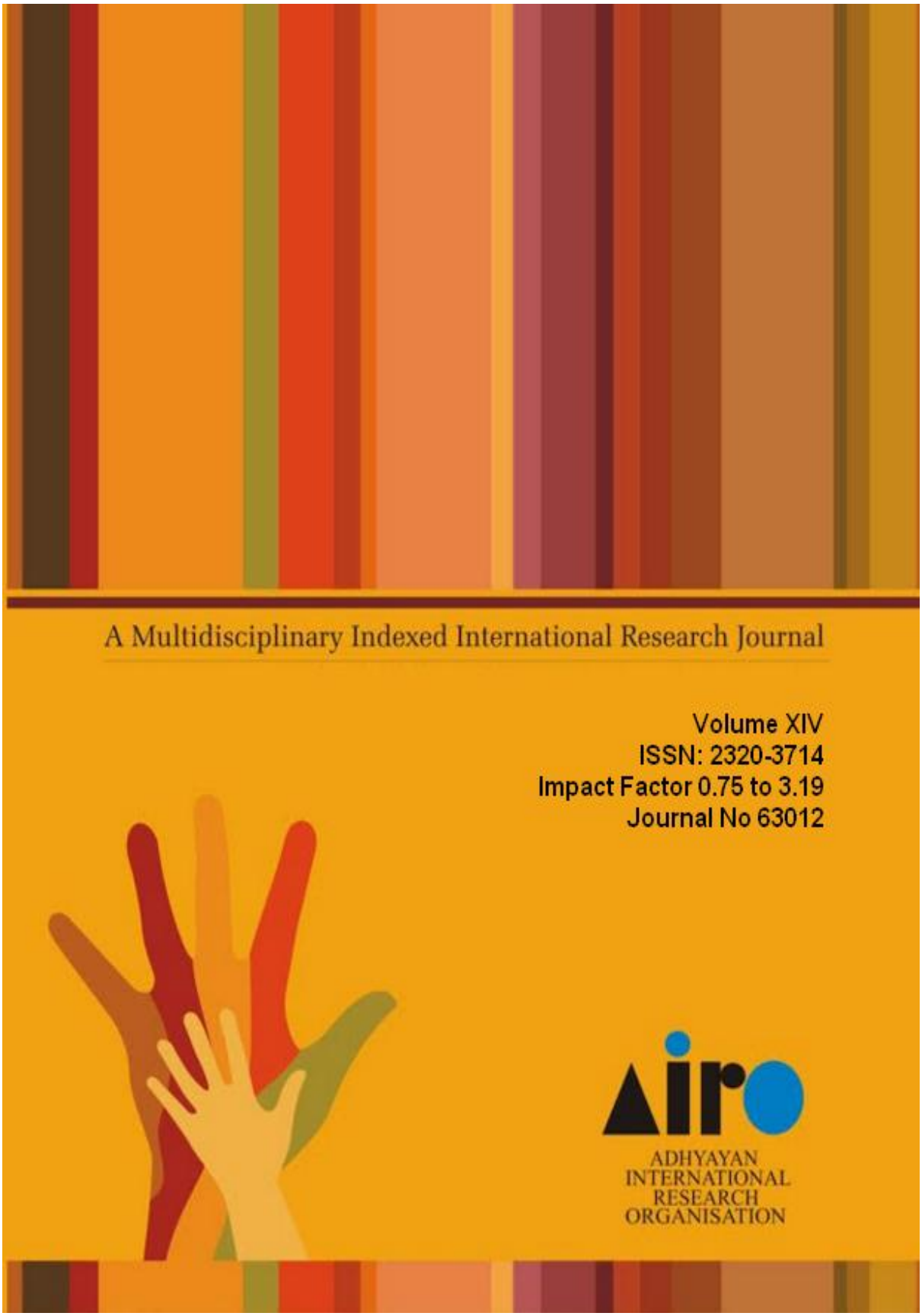

Airo International Research Journal

Volume XIV, ISSN: 2320-3714
December, 2017 **UGC Approval Number 63012**

1. Title अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों का अभिमत |

2. Name Dr. Deepa Jain (PRINCIPAL)

3. College Name Tagore Shiksha Mahavidyalaya, Indore (M.P.)

4. Email ID drdeepajain27@gmail.com

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research papers copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

प्रस्तावना

शिक्षक दैनन्दिनी, प्रयास व्योम सदृश्य थे।
प्रकीर्ण दैदिप्त्यमान, अंध निवार्णनार्थ हैं।
विज्ञ, विज्ञयता, असीम गुरूत्व प्रकाश हैं।
नदीम नत्य हेतु सुविचार पथ विस्तीर्ण हैं।

अध्यापक के कार्य का, जिसमें समस्त क्रियाओं की नैदानिक सम्प्राप्ति निहित मानी जाती है। शिक्षक के लिए आवश्यक रूप से कार्य संचालन की एक महन्ती परन्तु नित्य पूर्व क्रियात्मक क्रिया हैं। जो शिक्षक छात्र दोनों के हित के लिए तथा उनके भावपूर्ण सम्बन्धों के लिए भी अति आवश्यक हैं।

इसे दूसरे स्पष्ट शब्दों में कह सकते हैं। कि शिक्षकों के नियमित व व्यवस्थित कार्य संचालन के लिए तथा योजनानुरूप अभ्यास क्रम पूरा करने के लिए प्रत्येक अध्यापकों को दैनन्दिनी रखना आवश्यक होता हैं। अध्यापक दैनन्दिनी दैनिक शिक्षक की पूर्व तैयारी, क्रमबद्ध व व्यवस्थित शिक्षक समय चक्रानुरूप कार्य कलापों को व्यवस्थित करने छात्रों को नियमित गृहकार्य देने तथा मूल्यांकित करने के लिए अति आवश्यक हैं तथा अध्यापक हेतु एक महत्वपूर्ण सहचर के लिए साधन हैं।

प्रशासनिक दृष्टि से प्रधानाध्यापक का शिक्षक सम्बन्धित शिक्षक योजना, पाठय एवं प्रवृत्तियों के संचालन की जानकारी आवश्यकमार्गदर्शन के लिए भी अति आवश्यक हैं।

प्रत्येक अध्यापक के लिए दैनन्दिनी को रखना आवश्यक हैं। अतः दैनन्दिनी में अध्यापके के कार्य शिक्षा कार्य योजना शिक्षक प्रक्रिया, शिक्षक विधि विद्यार्थियों का मूल्यांकन उनकी उपस्थिति आदि का उल्लेख होता है।

क्रं. सं.	मानदण्ड	तृतीय श्रेणी अध्यापक		द्वितीय श्रेणी अध्यापक (वरिष्ठ अध्यापक)	प्रथम श्रेणी अध्यापक (प्राध्यापक स्कूल शिक्षा)
		प्राथमिक	उच्च प्राथमिक		
1	परीक्षा परिणाम	समान परीक्षा व्यवस्था क्षेत्र (जिला / उपजिला, पंचायत समिति) के उस वर्ष के स्तर के समान विषयानुसार	(अ) समान परीक्षा व्यवस्था क्षेत्र (जिला / उपजिला, पंचायत समिति) के उस वर्ष के स्तर के समान विषयानुसार (ब) ब्राह्मय परीक्षा बोर्ड के उस वर्ष के स्तर के समान विषयानुसार	(अ) समान परीक्षा व्यवस्था क्षेत्र (जिला / उपजिला, पंचायत समिति) के उस वर्ष के स्तर के समान विषयानुसार (ब) ब्राह्मय परीक्षा 10वीं कक्षा बोर्ड के उस वर्ष के स्तर के समान विषयानुसार	(अ) समान परीक्षा व्यवस्था क्षेत्र (जिला / उपजिला, पंचायत समिति) के उस वर्ष के स्तर के समान विषयानुसार (ब) ब्राह्मय परीक्षा 12वीं कक्षा बोर्ड के उस वर्ष के स्तर के समान विषयानुसार (स) एस.टी.सी. व समकक्ष
2.	सहशैक्षिक	शारीरिक शिक्षा	किन्ही दो	किन्ही दो	किन्ही दो

	प्रवृत्तियाँ (सहगामी प्रवृत्तियां)	सम्बन्धी किसी एक प्रकृति के साथ कोई एक अन्य प्रकृति	सहशैक्षणिक प्रवृत्तियों का नियोजन, आोजन मार्गदर्शन एवं मूल्यांकन का दायित्व	सहशैक्षणिक प्रवृत्तियों का नियोजन, आयोजन मार्गदर्शन एवं मूल्यांकन का दायित्व	सहशैक्षणिक प्रवृत्तियों का नियोजन आयोजन मार्गदर्शन एवं मूल्यांकन का दायित्व
3	व्यावसायिक उन्नयन	प्रायोगिक विकासात्मक प्रयोजना रचनात्मक लेखन	प्रायोगिक विकासात्मक प्रयोजना रचनात्मक लेखन	(अ) प्रायोगिक विकासात्मक प्रयोजना एक (ब) रचनात्मक लेखन	(अ) प्रायोगिक विकासात्मक प्रयोजना एक (ब) रचनात्मक लेखन
		पत्र–वाचन प्रदर्शन पाठ संगोष्ठी वार्ता व्यावसायिक योग्यता वृद्धि सेवारत प्रशिक्षक आदि में से कोई एक	पत्र–वाचन प्रदर्शन पाठ संगोष्ठी वार्ता व्यावसायिक योग्यता वृद्धि सेवारत प्रशिक्षक आदि में से कोई एक	पत्र–वाचन प्रदर्शन पाठ संगोष्ठी वार्ता व्यावसायिक योग्यता वृद्धि सेवारत प्रशिक्षक आदि में से कोई एक	पत्र–वाचन प्रदर्शन पाठ संगोष्ठी वार्ता व्यावसायिक योग्यता वृद्धि सेवारत प्रशिक्षक आदि में से कोई एक
4.	सहायता एवं सहयोग	शाला प्रशासन/ कक्षाध्यापक पारी प्रभारी, परीक्षा प्रभारी छात्र संघ अनुशासन प्रभारी एवं अन्य दायित्व	शाला प्रशासन/ कक्षाध्यापक पारी प्रभारी, प्रभारी छात्र संघ अनुशासन प्रभारी एवं अन्य दायित्व	शाला प्रशासन/ कक्षाध्यापक पारी प्रभारी, प्रभारी छात्र संघ अनुशासन प्रभारी एवं अन्य दायित्व	शाला प्रशासन/ कक्षाध्यापक पारी प्रभारी, प्रभारी छात्र संघ अनुशासन प्रभारी एवं अन्य दायित्व

शिक्षक दैनन्दिनी का उपयोग :–

कक्षा शिक्षकों उद्देश्य निष्ठा एवं प्रभावी बनाने की दृष्टि से दैनन्दिनी का नियमित संधारण आवश्यक हैं। दैनन्दिनी अध्यापक को शिक्षक की पूर्व तैयारी का अभ्यास देती हैं साथ ही उसके द्वारा करवाये गये शिक्षकों एक लिखित साक्ष्य भी हैं। अतः अध्यापक अध्यापिका को सत्रारम्भ में समय विभाग चक्र निर्धारण के साथ ही दैनन्दिनी का संधारण कर देना चाहिए। दैनन्दिनी का संधारण करते समय निम्नांकित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए।

शिक्षक की वार्षिक योजना :–

1. सत्रारम्भ के प्रथम सप्ताह में शिक्षक की वार्षिक योजना बनाई जावें।
2. प्रत्येक कक्षा व विषय हेतु एक प्रथक – प्रथक योजना का निर्माण किया जावे।
3. योजना का निर्माण दैनन्दिनी में वर्णित प्रवत्रानुसार किया जावें।
4. कार्य विभाजन (माह तथा इकाई वार) का ब्यौरा स्पष्ट रूप से दिया जावें।
5. एक ही विषय को कक्षा के विभिन्न वर्गों में एक ही अध्यापन द्वारा अध्यापक कार्य करवाया जाता हैं तो प्रत्येक कक्षा व वर्ग हेतु एक ही इकाई योजना बनाई जावें।

दैनिक पाठ योजना :–

1. दैनिक पाठ योजना का निर्माण दैनन्दिनी में वर्णित प्रारूप में किया जावें।
2. प्रारूप में उल्लेखित स्तम्भ अध्यापक बिन्दु में पाठ से सम्बन्धित मुख्य बिन्दुओं को लिखा जाये, केवल पाठ का नाम लिखना ही पर्याप्त नहीं हैं।
3. शिक्षकविधि के अर्न्तगत प्रश्नोंतर विधि पाठ प्रदर्शन विधि व्याख्यान विधि इत्यादि में से अध्यापन के समय जिस विधि का उपयोग किया जायेगा, का उल्लेख किया जाये।

4. कक्षा शिक्षक के समय अध्यापक द्वारा प्रयुकत की जाने वाली सहायक सामग्री का भी स्पष्ट उल्लेख किया जावें।

5. गृहकार्य के अर्न्तगत पुस्तक में से दिये जाने वाले प्रश्नों के क्रमांक या अध्यापक द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नों का उल्लेख किया जावें।

शैक्षिक मूल्यांकन :–

प्रभावी अधिगम के लिए आवश्यक है कि छात्रों का शिक्षक के साथ–साथ मूल्यांकन भी किया जाय ताकि कमजोर एवं प्रतिभावान छात्रों को चयन कर तदनरूप मार्गदर्शन दिया जा सके। इस हेतु निम्नांकित कार्य किये जाने चाहिए –

1. छात्र – छात्राओं के विभिन्न परीक्षाओं में प्राप्त अंक का अभिलेख रखा जायें।

2. परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर अपने विषय के प्रतिभावान एवं कमजोर छात्रों की सूचि बनाकर उनके लिए विशेष शिक्षक की योजना बनाकर मूल्यांकन करें।

समस्या कथन :–

किसी भी अनुसंधान कार्य के लिए समस्या कथन महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिसका अर्थ केवल शीर्षक का उल्लेख मात्र ही नहीं है अपितु इससे सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य का एक कल्पना चित्र मस्तिष्क में बन जाता है। अतः अनुसंधानकर्ता ने निम्न विषय चुना –

''अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों का अभिमत''

प्रस्तुत शीर्षक चयन करने का प्रमुख कारण यह है कि शिक्षा जगत में अध्यापक दैनन्दिनी एवक महत्वपूर्ण उपकरण की तरह कार्य करती है जिसके द्वारा अध्यापक के द्वारा पढ़ाए जाने वाले अध्यापक के द्वारा पढ़ाए जाने वाले अध्याय के बारे में संक्षिप्त एवं महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अध्याय की पूर्व तैयारी हो जाती है। अध्ययन अध्यापन की विधि, प्रविधि, कक्षा–कक्ष वातावरण एवं छात्र सहभागिता में सहायता प्राप्त होती है। इसलिए अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता वर्तमान युग में महत्वपूर्ण आवश्यकता है तथा

इस पर अभी तक कोई भी शोधकार्य नहीं हुआ है। अतः मैंने इस समस्या पर शोध करना उचित समझा है।

समस्या का उद्देश्य :–

प्रत्येक अनुसंधान कार्य के पूर्व निर्धारित उद्देश्य होते हैं। जिसके आधार पर तथ्यों द्वारा वास्तविकता का पता लगाया जाता है। उद्देश्यों का स्तर लक्ष्यों का निर्धारण कार्य को निरन्तर गति एवं गरिमा प्रदान करते हुए अध्ययन कार्य को सफलता दिलाता है। अतः अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने अनुसंधान सम्बन्धित निम्नलिखित शोध उद्देश्यों का निर्धारण किया है।

1. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में सामग्री प्रधानाध्यापकों का अभिमत।
2. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल पुरूष प्रधानाध्यापकों का अभिमत।
3. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल महिला प्रधानाध्यापिकाओं का अभिमत।
4. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में सामग्री अध्यापकों का अभिमत।
5. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल पुरूष अध्यापकों का अभिमत।
6. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल महिला अध्यापिकाओं का अभिमत।

परिकल्पना :–

परिकल्पना के पूर्व कथन है जो पूर्व अनुभवों पर आधारित होते है प्रस्तुत अनुसंधान कार्य से सम्बन्धित शोध परिकल्पना निम्नलिखित है –

1) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में सामग्री प्रधानाध्यापकों के अभिमत में कोई सार्थकता अन्तर नहीं है।

2) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल पुरूष प्रधानाध्यापकों के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नही है।

3) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल महिला प्रधानाध्यापिकाओं के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में सामग्री अध्यापकों के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल पुरूष अध्यापकों के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नही है।

6) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में केवल महिला अध्यापिकाओं के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श का चयन :–

समयाभाव एवं अध्ययन में विश्वसनीयता को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने शोध कार्य में न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया है जो निम्न प्रकार है–

1) प्रस्तुत शोध राजसमन्द जिले के 30 विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को सोद्देश्य विधि से चयनित किया है जिसमें 15 पुरूष प्रधानाध्यापकों एवं 15 महिला प्रधानाध्यापकों के चयन किये गये है।

2) प्रस्तुत शोध राजसमन्द जिले के 30 विद्यालयों के 120 अध्यापकों को सोद्देश्य विधि से चयनित यिका गया है जिसमें 60 पुरूष अध्यापक एवं 60 महिला अध्यापकों का चयन किया गया है–

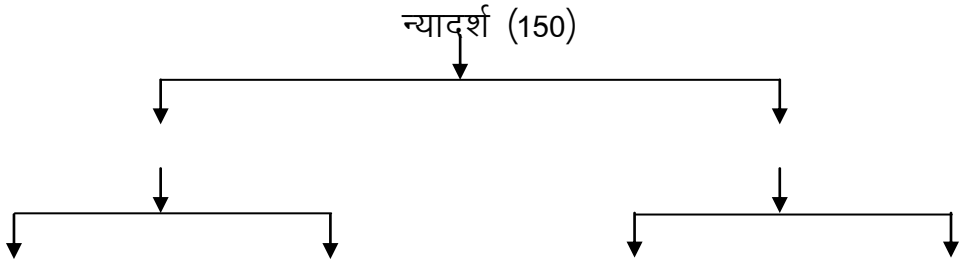

प्रधानाध्यापक (30) अध्यापक (120)

पुरूष प्रधानाध्यापक महिला प्रधानाध्यापक पुरूष अध्यापक महिला अध्यापक

अध्ययन विधि :–

अध्ययन विधि वह मार्ग है जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सकती है प्रस्तुत अनुसंधान समूह पर आधारित है अतः सर्वेक्षण विधि का चयन किया जाएगा।

उपकरण :–

प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन तत्वों के संकलन हेतु अथवा नवीन क्षेत्रों का उपयोग करने हेतु कतिपय यंत्रों की आवश्यकता पड़ती है। इन यंत्रों को उपकरण कहते है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु एक स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा। जिसमें–

1) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में प्रधानाध्यापक एवं अभिमतावली का निर्माण किया जायेगा।

2) अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में अध्यापक अभिमतावली की निर्माण किया जाएगा।

दत्तों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

वर्गीकरण के पश्चात् तथ्यों को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए सारणीयन किया गया। सारणीयन से अंक सरतला से समझ में आ जाते है। तथा गणना व तुलना करने में आसानी रहती है।

जब हम तथ्यों को उसमें पाई जाने वाली समानता या विभिन्नता के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत तथा तथ्यों को एक तालिका के क्रम में स्तम्भों एवं पंक्तियों में व्यवस्थित करते है तो यह सारणीयन कहलाता है।

अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति प्रधानाध्यपकों के अभिमत को जानने हेतु न्यादर्श द्वारा भरी गई अभिमतावली के आधार पर निम्न तथ्य परिलक्ष्ज्ञित होते है। यह विश्लेषण मध्यमान के आधार पर किया गया –

सारणी संख्या

अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में सामग्री प्रधानाध्यापकों का अभिमत

क्रं. सं.	क्षेत्र का नाम	कट ऑफ पॉइन्ट	मध्यमान
1.	अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता	11x2=22	26.83
2.	अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याएँ	11x2=22	28.04
3.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य	10x2=20	25.63
4.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवर्यता	10x2=20	26.57

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री प्रधानाध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र – I अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 26.83 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सामग्री प्रधानाध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता के बारे में सकारात्मक सोच रखते है।
2. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री प्रधानाध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र – II अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याएँ** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 28.04 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। प्रधानाध्यापकों का

अभिमत सकारात्मक पाया गया। अतः अधिकांश अध्यापक दैनन्दिन नियमित भरते है तथा इस हेतु संस्था प्रधान उन्हें अभिप्रेरित करते है। कुछ प्रधानाध्यापकों का मानना है कि दैनन्दिनी औपचारिकता मात्र हैं।

3. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री प्रधानाध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र – III अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 25.63 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि प्रधानाध्यापकों का दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य पर अभिमत सकारात्मक पाया गया। अतः अधिकांश प्रधानाध्यापकों का मानना है कि अध्यापक दैनन्दिनी भरने से व्यवस्थिति शिक्षण कार्य होता है। इससे शिक्षक क्रियाशील रहते है।

4. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री प्रधानाध्यापकों का **क्षेत्र –IV अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवार्यता** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 26.57 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः प्रधानाध्यापकों का दैनन्दिनी भरने के प्रति सकारात्म अभिमत पाया गया। अतः सभी प्रधानाध्यापकों का मानना है कि दैनन्दिनी भरना अनिवार्य किया जाना चाहिए ताकि आदर्श शिक्षकों का निमार्ण हो सके। साथ ही शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाने हेतु दैनन्दिनी भरना अनिवार्य किया जाना चाहिए।

सारणी संख्या

अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में पुरूष प्रधानाध्यापकों के अभिमत

क्रं. सं.	क्षेत्र का नाम	कट ऑफ पॉइन्ट	मध्यमान
1.	अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता	11x2=22	28.7
2.	अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याएँ	11x2=22	29.84
3.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य	10x2=20	25.03
4.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवर्यता	10x2=20	27.4

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष प्रधानध्यापकों के **क्षेत्र –I अध्यापक दैनन्दिनी भरने की गुणवत्ता** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 28.7 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः पुरूष प्रधानाध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता के प्रति सकारात्मयक सोच रखते है। यह सोचते है कि दैनन्दिनी शिक्षण सम्बन्धी कमजोरी को दूर करने में सहायक हैं तथा यह शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने शिक्षण प्रक्रिया को क्रमबद्ध करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

2. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष प्रधानध्यापकों के **क्षेत्र –II अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याओं** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 29.84 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः पुरूष प्रधानाध्यापक दैनन्दिनी के उपयोग व समस्रूा के प्रति सकारात्मक सोच रखते है। अधिकांश पुरूष प्रधानाध्यापक नियमित दैनन्दिनी भरवाते है तथा इस हेतु अपने स्टॉफ को अभिप्रेरित भी करते है। अध्यापकों को इसे भरने में कोई समस्या नही रहती हैं।

3. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष प्रधानध्यापकों के **क्षेत्र –III अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य** के कथनों के प्राप्तांकों का मध्यमान 25.03 प्राप्त हुआ है। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः पुरूष प्रधानाध्यापकों दैनन्दिनी को उद्देश्यपूर्ण कार्य समझते है। इससे उनकी सकारात्मक सोच का पता चलता है। साथ ही वे यह सोचते है कि इससे शिक्षक क्रियाशील रहा है तथा वह आत्मविश्वास के साथ शिक्षण कार्य सम्पन्न करवाता है।

4. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष प्रधानध्यापकों का **क्षेत्र –IV अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवार्यता** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 27.4 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है इससे पता चलता है कि समस्त पुरूष प्रधानाध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के प्रति सकारात्मक सोच रखते है, वे यह मानते है कि शिक्षण कार्य की प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु दैनन्दिनी भरना अनिवार्य है। वे यह सोचते है कि दैनन्दिनी में कमजोर व प्रभावी छात्रों का रिकार्ड रखना चाहिए।

अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में महिला प्रधानाध्यापकों का अभिमत

क्रं. सं.	क्षेत्र का नाम	कट ऑफ पॉइन्ट	मध्यमान
1.	अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता	11x2=22	24.7
2.	अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याएँ	11x2=22	25.43
3.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य	10x2=20	24.57
4.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवर्यता	10x2=20	26.63

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में महिला प्रधानाध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–I अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यमान 26. 83 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सामग्री प्रधानाध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता के बारे में सकारात्मक सोच रखती है। उनका मानना है कि दैनन्दिनी पाठ्यचर्या पूर्ण करने में सहायक है तथा इससे शिक्षण कार्य जाँचने में सुविधा रहती हैं।

2. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में महिला प्रधानाध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–II अध्यापक दैनन्दिनी भरने की उपयोगिता व समस्या** के कथनों पर प्राप्तांकों का मध्यामान 25.43 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक हैं। अतः दैनन्दिनी की उपयोगिता के प्रति सकारात्मक सोच विकसित होती है तथा वे नियमित अध्यापकों से दैनन्दिनी भरवाना चाहे है लेकिन कुछ प्रधानाध्यापक का मानना है कि दैनन्दिनी भरवाना मात्र एक औपचारिकता है, इससे समय खराब होता है।

3. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में महिला प्रधानाध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–III अध्यापक दैनन्दिनी भरने क उद्देश्य** के कथनों पर प्राप्तांकों का

मध्यमान 24.57 प्राप्त हुआ जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः इससे प्राधानाध्यापकों की सकारात्मक सोच विकसित होती है। उनका मानना है कि दैनन्दिनी भरना एक उद्देश्यपूर्ण कार्य है। इससे शिक्षा उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। साथ ही यह विद्यालय के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक है। परन्तु उनका यह मानना भी है कि कुछ अध्यापक इसे मात्र एक शिक्षण कार्य का रिकार्ड रखने तक ही सीमित समझते है।

4. अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में महिला प्रधानाध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–IV अध्यापक दैनन्दिनी भरने अनिवार्यता** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 26.63 प्राप्त हुआ जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः महिला प्रधानाध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के प्रति सकारात्मक सोच रखती है। साथ्ज्ञ ही वे संस्थाप्रधान होने के नाते अपने अध्यापकों को नियमित दैनन्दिनी भरने के निर्देश देती है। उनका मानना है कि शैक्षिक मूल्यांकन हेतु दैनन्दिनी भरना अनिवार्य है। इससे व्यवस्थित कार्य संचालन करने में सहायता प्राप्त होती है। लेकिन कुछ प्रधानाध्यापक यह मानते है कि यह शिक्षकों पर अतिरिक्त कार्यभार हैं।

अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री अध्यापकों का अभिमत जानने हेतु न्यादर्श द्वारा भरी गई अभिमतावली के आधार पर निम्न तथ्य परिलक्षित होते है–

अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में सामग्री अध्यापकों का अभिमत

क्रं. सं.	क्षेत्र का नाम	कट ऑफ पॉइन्ट	मध्यमान
1.	अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता	11x2=22	28.4
2.	अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याएँ	11x2=22	29.4
3.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य	10x2=20	26.77
4.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवर्यता	10x2=20	26.49

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री अध्यापकों का अभिमतावल के **क्षेत्र–I अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता** केकथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यामान 28.4 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः दैनन्दिनी की गुणवत्ता के प्रति सामग्री अध्यापकों की सकारात्मक सोच विकासित होती है। वे यह मानते है कि दैनन्दिनी शिक्षण में कमियाँ ज्ञात करने में सहायक हैं। तथा इसे भरने से शिक्षकों में आत्मविश्वास की पूर्ति होती हैं और वे अधिक सफल रूप से शिक्षण कार्य कराने में सक्षम हो सकते है।

2. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–II अध्यापक दैनन्दिनी की उपयोगिता व समस्या** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 29.4 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः सामग्री अध्यापकों की दैनन्दिनी की उपयोगिता के बारे में सकारात्मक सोच का पता चलता है। उनका मानना है कि दैनन्दिनी शिक्षण पूर्व तैयारी हेतु प्रेरित करते है। परन्तु कुछ अध्यापक इसे एक बोझिल कार्य भी समझते हैं।

3. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–III अध्यापक दैनन्दिनी भरने का उद्देश्य** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 26. 77 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः सामग्री अध्यापकों की दैनन्दिनी की उपयोगिता के बारे में सकारात्मक सोच पाई जाती है। उनका मानना है कि दैनन्दिनी से शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है तथा इससे शिक्षक क्रियाशल रहते है।

4. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति सामग्री अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–IV अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवार्यता** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 26.49 प्राप्त हुआ। जो दैनन्दिनी की अनिवार्यता के प्रति सकारात्मक सोच विकसित होती है। परन्तु उनका मानना है कि दैनन्दिनी भरने का समय निश्चित होना चाहिए। क्योंकि अधिकांश अध्यापक या तो कक्षा कक्ष में या कक्षा में जाने से पूर्व ही इसे भरते है। इससे उसका लाभ उन्हें नहीं मिल पाता है।

अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में पुरूष अध्यापकों का अभिमत

क्रं. सं.	क्षेत्र का नाम	कट ऑफ पॉइन्ट	मध्यमान
1.	अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता	11x2=22	28.73
2.	अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याएँ	11x2=22	27.4
3.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य	10x2=20	26.3
4.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवर्यता	10x2=20	24.4

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष अध्यापकों का अभिमतावल के **क्षेत्र–I अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यामान 28.73 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः दैनन्दिनी की गुणवत्ता के प्रति सामग्री अध्यापकों की सकारात्मक सोच का पता चलता है। वे यह मानते है कि दैनन्दिनी से शिक्षण समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित होती है। इससे अध्यापकों को शिक्षण में होने वाली कमियाँ का पता चलता है तथा इससे विषय वस्तु क्रमबद्ध कर पढ़ाने में सहायता मिलती है।

2. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूषा अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–II अध्यापक दैनन्दिनी की उपयोगिता व समस्याएँ** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 24. 4 प्रापत हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः अध्यापक यह सोचते है कि दैनन्दिनी में लिखित योजना अनुसार शिक्षण कराने से शिक्षण कार्य व्यवस्थित होता है तथा इससे शिक्षक पूर्ण तैयारी से शिक्षण करा पता है। लेकिन कुछ अध्यापक इसे बोझिल कार्य समझते है।

3. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–III अध्यापक दैनन्दिनी भरने का उद्देश्य** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 26.3 प्राप्त

हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः अध्यापकों की सकारात्मक सोच विकसित होती है। उनका मानना है कि दैनन्दिनी भरने से व्यवस्थित शिक्षण कार्य होता है।

4. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–IV अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवार्यता** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 24.4 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः पुरूष अध्यापकों का मानना है कि दैनन्दिनी भरना न केवल उत्तर शिक्षण कार्य हेतु बल्कि व्यवस्थित विालयच संचान हेतु भी अनिवार्य है। अतः इसे प्रत्येक अध्यापक द्वारा नियमित रूप से भरा जाना चाहिए। सभी अध्यापक इसके बारे में सकारात्मक सोच रखते है।

अध्यापक दैनन्दिनी की अनिवार्यता के बारे में महिला अध्यापकों का अभिमत

क्रं. सं.	क्षेत्र का नाम	कट ऑफ पॉइन्ट	मध्यमान
1.	अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता	11x2=22	29.74
2.	अध्यापक दैनन्दिनी का उपयोग व समस्याएँ	11x2=22	28.33
3.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने के उद्देश्य	10x2=20	27.36
4.	अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवर्यता	10x2=20	25.72

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति पुरूष अध्यापकों का अभिमतावल के **क्षेत्र–I अध्यापक दैनन्दिनी की गुणवत्ता** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 29.74 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः महिला अध्यापकों की दैनन्दिनी की गुणवत्ता के प्रति सकारात्मक सोच विकसित होती है। उनका मानना है कि इसेस शिक्षण गुणवत्ता में सुधार सम्भव है तथा पूर्व में निर्धारित योजना से छात्र भी शिक्षण में रूचि लेते है।

2. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति महिला अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–II अध्यापक दैनन्दिनी की उपयोगिता व समस्याओं** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 28.33 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 22 से अधिक है। अतः महिला, अध्यापक दैनन्दिनी की उपयोगिता के बारे में सकारात्मक सोच रखती है। वे मानती है कि यह शिक्षण कार्य में एक अत्यन्त उपयोग शस्त्र है जो शिक्षण की प्रक्रिया को सरल व सुव्यवस्थित बनाता है।

3. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति महिला अध्यापकों का अभिमतावली के **क्षेत्र–III अध्यापक दैनन्दिनी भरने का उद्देश्य** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 27. 34 प्राप्त हुआ। जो कट ऑफ पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः यह महिला अध्यापकों की सकारात्मक सोच विकसित करती हैद्व उनका मानना है कि दैनन्दिनी अध्यापक तथा प्रधानाध्यापक के मध्य समन्वय अर्थात् एक कड़ी का कार्य करती है। साथ ही यह अध्यापक एवं छात्र के मध्य समन्वय हेतु आवश्यक है।

4. अध्यापक दैनन्दिनी के प्रति महिला अध्यापकें का अभिमतावली के **क्षेत्र–IV अध्यापक दैनन्दिनी भरने की अनिवार्यता** के कथनों पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 24.4 प्राप्त हुआ। जो कट पॉइन्ट 20 से अधिक है। अतः पुरूष अध्यापकों का मानना है कि दैनन्दिनी भरना न केवल उत्तम शिक्षण कार्य हेतु बल्कि व्यवस्थित विद्यालय संचालन हेतु भी अनिवार्य है। अतः इसे प्रत्येक अध्यापक द्वारा नियमित रूप से भरा जाना चाहिए। सभी अध्यापक इसकी अनिवार्यता के बारे में सकारात्मक सोच रखते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	Best, J.W. "Research in education" (1959) New York prentice Hall of India (PVT) l.t.d.
2.	Buch, MB (Ed.) : Fourth Survey of Research in Education, (1983-88), Vol. 1 NCERT (1991)

3.	Buch, MB (Ed.) : Fourth Survey of Research in Education, (1983-88), Vol.2 NCERT (1991)
4.	कोढियाल, एस.एम. (1972) ''पाठ्य ए.बी. : शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर। (पृ..217)
5.	पाठक, पी.डी. (1977) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6.	माथुर, एस.एस. (1977) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7.	सुखिया एस.पी. मेहरोत्रा (1984) : ''शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8.	बेस्ट जॉन डब्ल्यू. (1995) : ''शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9.	वशिष्ठ, के.के. (1997) : विद्यालय संगठन एवं भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।
10.	कपिल एच.के (1998) : ''अनुसंधान विधियाँ'', हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
11.	सिंह डॉ. रामपाल, भार्मा डॉ. ओ.पी., (2008) : ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'', विनोद पुस्त्क मंदिर, आगरा।
12.	सरीन एण्ड सरीन (2008) : ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
13.	अध्यापक दैनन्दिनी – पुस्तक सदन उदयपुर।
14.	अध्यापक दैनन्दिनी – रस्तोगी एण्ड रस्तोगी कचहरी रोड़, अजमेर।